ALFA INVESTMENTS

किंग
कॉमिक्स
मूल्य 7.00 संख्या 2

षड्यंत्र

अभेद्य सीरीज

125-9

नक्षत्र

ओशिया महाद्वीप

जो बंटा हुआ है सैकड़ों द्वीपों में।

जिसके हर द्वीप के अपने-अपने शासक और अपने-अपने कानून

हर द्वीप एक-दूसरे का कट्टर दुश्मन। एक-दूसरे को फाड़ खाने को हर समय तैयार –

झारखण्डा! ये नाम है उस द्वीप का जो ओशिया महाद्वीप का सबसे अधिक शक्ति-शाली और विकसित द्वीप है –

सम्पादक :- विवेक मोहन
कथानक :- नाजरा खान
चित्रांकन :- दिलीप चौबे

अन्य द्वीपों की तरह सबसे अलग है झारखण्डा के कानून भी -

किसी दूसरे इलाके के चोर-लुटेरे को कहीं और गिरफ्तार नहीं किया जा सकता...

दरोगाजी पकड़िए उसे।

चलबे। वह हमारे इलाके का नहीं है।

किसी को मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता... उसके स्थान पर दी जाती हैं यातनाएँ -

आऽऽऽह!

जिसके लिए झारखण्डा में बनाऐं गये हैं सैकड़ों यातना कक्ष -

अब एक नजारा झारखण्डा के उस प्रसिद्ध बाजार का जिसका नाम है -

सुपर हीरो मार्किट

JHARKHAYDA SUPER HERO MARKET

महाबली आलसीराम
अत्यन्त बलशाली! लीजिए सेवाएं ५०% डिसकाउंट पर

आपका अपना सुपर हीरो
उड़न छू
सेवाऐं लीजिए और पाइये एक माचिस मुफ्त

SUPER HERO DI HATTI
यहां अलग - अलग शक्तियों वाले सुपर हीरो बाजार से सस्ते व उचित दामों पर उपलब्ध हैं। एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

एक मात्र सुपर हिरोइन
मिस फुर्तीली

सुपर हीरो गुलगुला से लीजिए १० % अधिक सेवाऐं शानदार भेंट 31 दिसंबर तक।

SUPER HERO SALE PURCHA CENTRE
यहां सभी प्रकार के सुपर हीरोज की सेवाए खरीदी व बेची जाती हैं!

हीरो का हीरो
गमबोला
शानदार भेंट एडवांस बुकिंग करवाने पर..

सुपर हीरो सर्विस स्टेशन
यहां लुटे-पिटे सुपर हीरो की मरम्मत तसल्ली बख्श की जाती है।

कई विचित्रताओं से भरे महान विकसित झारखण्डा पर हुकूमत चलती है नरेश झारखण्डिया की –

मन्दबुद्धि नरेश झारखण्डिया, जिन्हें झारखण्डा की गद्दी सिर्फ इसलिए मिल गई, क्योंकि वो राजपरिवार के सदस्य हैं और नियमानुसार राजपरिवार का सदस्य ही झारखण्डा पर राज कर सकता है –

अत्यंत विकसित झारखण्डा और मंदबुद्धि नरेश झारखण्डिया –

यही दो कारण बहुत हैं झारखण्डा पर सैकड़ों बुरी नजर होने के –

झारखण्डा के प्रधानमंत्री बालनोच –

जब तक मैं झारखण्डा का नरेश नहीं बन जाता अपनी टांट पर एक भी बाल नहीं उगने दूंगा।

मुख्यमंत्री झारझरोड़ –

ऐ ऊपर वाले कब बनाएगा मुझे झारखण्डा नरेश।

काऊपिऊ द्वीप का सम्राट पेट –

खाये-जाऊंगा। खाये जाऊंगा। जब तक झारखण्डा नरेश नहीं बन जाता।

तलकफाड़ द्वीप का सम्राट आंख फोड़ सिंह –

रोईये मत सम्राट जी। हम प्रयत्न करने में लगे हुए हैं। जल्द ही झारखण्डा पर हमारी पताका लहराएगी।

सुल्तानपुर का सम्राट मंबोलपुरी –

कब, कब होगा मेरा झारखण्डा?

बाटापुर नरेश जुलामार तो निकल ही पड़ा अपनी सेना के साथ झारखण्डा को जीत लेने के लिये –

भारखण्डा के राजमहल में पहुंची यह सूचना तो-

बाहर निकलिए नरेश जी। और कोई उपाय कीजिये। दुश्मनों के दांत खट्टे करने का।

दुश्मनों के दांत खट्टे करने से अगर गुजारा चल जाये तो जाकर इसकी व्यवस्था दो उन्हें, लेकिन हमें बाहर निकलने को मत कहो।

खेल उठी थी शैतानी मुस्कुराहट प्रधानमंत्री बालमोंच के होठों पर-

अब गया ये देश नरेश भारखण्डिया के हाथ से...

... मैं चला युद्ध रोकने के बहाने सम्राट जहाजार से संधि करने।

नजर आ रही थी कहीं-

क्रोध से जल उठी स्क्रीन पर गड़ी वह दो आंखें-

भारखण्डा पर बाटापुर के सम्राट जहाजार की सेना...

.. लेकिन हमारे होते जूनामार भारखण्डा की पवित्र भूमि की धूल भी नहीं पा सकता।

झटके से उठकर एक तरफ चल पड़ा वह -

इससे पहले ज्यादा आगे बढ़ पाये बाटापुर की फौज, हमें उसे रोकने के इन्तजाम करने होंगे।

तीव्र गति से आगे बढ़ती बाटापुर की सेना के उत्साह को दुगना करती चली गई सम्राट जूनामार की ललकार -

आओ भारखण्डा वालो! आज तुम सबकी लाशों को रौंदकर आगे बढ़ेंगे हम।

तभी... ठीक तभी -

आश्चर्य कीर्तन करता चला गया ऊपर उठी हर आंख में -

ये विचित्र गोला कैसा?

क्या है उस गोले में?

उठते हुए कई सवाल -

तुरन्त ही मिले जिलके जवाब -

धड़ड़ड़

नजर आने लगा भय ही भय बाटापुर के सैनिकों के चेहरों पर-

इतनी बड़ी मशीन !

क्या करेगी ये मशीन हमारा ?

अगले पल मशीन ने जो किया वह पता तो सबको चला ...

धिड़ड़ड़

...लेकिन सम्भल कोई न सका -

आऊँ

34

गाढ़ा धुआं अपने आगोश में लेता चला गया वातावरण को -

बचाओऽऽ

बचाओऽऽ

बचाओऽऽ

और जल्द ही बाटापुर के बेहोश सैनिकों का ढेर लगता चला गया -

कुछ ही देर बाद बाटापुर के समस्त सैनिक अपने सम्राट के साथ यातना कक्ष की शोभा बढ़ा रहे थे -

सम्राट जी! बचाइये इन चूहों से!

आक! बचाओ चूहा मेरे नाक में घुस गया

मैं किसीको क्या बचाऊं मैं तो खुद फंसा हुआ हूं!

खुशी से झूम उठा था पूरा झारखण्डा -

हमारे लिए देवता का अवतार बनकर आई थी वह मशीन!

लेकिन वह आई कहां से थी?

पता नहीं!

सभी के मस्तिष्कों में तूफान के रूप में घुमड़ रहा था वह सवाल ...

.. जिसका जवाब नरेश भारखण्डिया अच्छी तरह जानते थे -

ये सब उन्ही का कमाल है। मुझे उनको धन्यवाद देने गुप्त भवन पहुंचना चाहिए।

गुप्त भवन की तरफ चल पड़े नरेश भारखण्डिया।

इस बात से बेखबर की कोई साया बनकर चल रहा है उनके पीछे -

गुप्त भवन में -

इस स्वीच को दबाने के पांच मिनट बाद मेरी उनसे भेंट होगी।

कौन है वो जिससे इतने गुप्त तरीके से भेंट करते हैं नरेश ?

ठीक पांच मिनट बाद -

कहिए नरेश! क्यों बुलाया है आपने हमें?

उस जीत का धन्यवाद देने के लिए प्रोफेसर आल्जा.

..जो आज हमें आपकी मशीनी कज़ह से मिली।

इसमे धन्यवाद देने की कोई आवश्यकता नहीं है नरेश। इस देश और आपकी रक्षा करना हमारा फर्ज है और अपने फर्ज हम उसी निष्ठा से निभाते रहेंगे

जैसे हमारे वे पूर्वज निभाते रहे जो पीढ़ी - दर पीढ़ी आपके पूर्वजों की सेवा में रत रहे।

अब हम चलते हैं नरेश। जंगल मे स्थित अपनी प्रयोगशाला 'झोपड़ा' को ज्यादा देर लावारिस नहीं छोड़ सकते हम

फिर जैसे आये थे प्रोफेसर आल्जा वैसे ही वापस चले गये।

प्रधानमंत्री बालनोच के चेहरे पर दिखने लगी लोमड़ी सी मक्कारी –

प्रोफेसर आलूजा जंगल में स्थित झोपड़ा नामक प्रयोगशाला।

यही है वे मुख्य कारण जिनकी वजह से आज तक झारखण्ड को कोई नहीं जीत पाया

लेकिन अब ऐसा नहीं होगा।

क्योंकि अब मैं न प्रोफेसर आलूजा को छोड़ूंगा और ना उसकी प्रयोगशाला झोपड़ा को।

मनमो ने अब झारखण्ड पर अपना राज्य होगा

यह सूचना तुरन्त ही सम्राट पेट्र तक पहुंचनी चाहिए।

जल्द ही –

प्रोफेसर आलूजा और उसका झोपड़ा...

फिर वह सूचना सम्राट पेंग तक -

बस! अब तो झारखण्डा को जीत कर ही मैं खाऊंगा और खाना।

और फिर झारखण्डा के समस्त विरोधियों तक जा पहुंची -

सैकड़ों पताकाएं ले चलो अपने साथ झारखण्डा के चप्पे चप्पे पर फहरानी हैं हमें अपनी पताकाएं।

सैकड़ों कोबरा सम्राट अब बूंद का पानी पीकर रोने के दिन लद गये बाबे

'वेद'-

मोगेम्बपुरी-

..मोगम्बो!

अगली किश्त में...

प्रोफेसर अलजा और उनकी प्रयोगशाला

और किंग्स

सभी की मनोरंजन की किंग्स...

एक पहाड़ पर मिलन हुआ तभी का तो चौंके बिना न रह सका कोई भी–

तुम भी।

और तुम भी।

तुम भी प्रोफेसर आलूजा की प्रयोगशाला को नष्ट करना चाहते हो।

तुम भी

सम्भाल लिये सभी ने अपने अपने हथियार .

खून पानी की तरह धरती पर बह पाता उससे पहले ही –

ठहरो

तुम सबकी लाशें गिराकर ही अब आगे बढ़ेगा पट्ट

मोलेसपुरी का हथियार बहायेगा तुम सबका खून।

हम सबका दुश्मन एक ही है और वह हम सबसे अधिक शक्तिशाली है

जल्दी पूरी करो अपनी बात। मेरा हथियार खून बहाने के लिए बेताब हो रहा है।

पुरी की प्रधानमंत्री बालनोच ने अपनी बात

हमें प्रोफेसर आलूजा को खत्म करने के लिए डटकर हो जाना चाहिए।

मौके की नजाकत को सभी ने समझा था तभी तो -

मुझे भी

तो फिर सभी मिल-जुलकर आगे बढ़ें

मुझे मजा है।

ओए मुझे भी

जल्द ही -

यहाँ पे झोपड़ जैसे दिखने लगा है

चलो अन्दर।

लेकिन झोपड़ा में प्रवेश करना इतना ही आसान होता तो बात ही क्या थी-

यह तो चप्पे-चप्पे पर थे सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध -

और इसलिए कि मेजर 5 की तरफ बढ़ते खतरों को शुरू में ही क्यों न खत्म कर दिया

किसी ने कर डाला सभी को निहत्था –

और फिर –

धूंऽऽ

सिगरी का नाच - नाच उठे सभी –

हाय रे ये खुजली मार डालेगी मुझे

कोई बचाओ रे मुझे इस खुजली से

यार ! जरा खुजादे !

चल बे मोट् ! मैं खुद खुजली से परेशान हूं !

कुछ के हथियार गरजने में सफल हो ही गये –

OH!

OH!

होना तो ये कि परस्वच्चे उड़ जाते झोपड़ा के –

लेकिन हुआ कुछ और ही -

हवा में ही लपक लिये गये गोले -

और

धड़ाम!

इधर दैत्य खड़े हो गये और भी दैत्य -

और अगले पल हवा से उड़ते हुए आये सभी के सभी

मुस्करा उठे प्रोफेसर आत्रेजा इस दृश्य को स्क्रीन पर देखकर।

अगर मैंने पूरी निष्ठा के साथ इस देश के कानून का पालन करने की सौगंध न खाई होती तो इन सबकी लाशें बिछी पड़ी होती मोपड़ा के आसपास।

षड़यंत्र

इधर ओपड़ा से कई सौ फुट दूर नक्का बड़बड़ हंका रहे थे -

क्य। इस मोटे से कचूमर निकाल दिए हमार

एक दिन सब समझ चुके थे

प्रोफेसर अमजद और उसके ओपड़ा को नष्ट नहीं कर सकने हम, इसलिए हमें आतंकवादी का सहारा लेने का विचार त्याग देना चाहिए

नहीं। अभी एक और दा जन है मेरे दिमाग में प्रोफेसर और उसका ओपड़ा नष्ट करने की।

क्या है प्रोफेसर की योजना ?

हमें सबसे पहले ओपड़ा

ओपड़ा

लिये क्यों मौत से खेल रहे हो नौजवान। ये सूटे फटेहाल हैं इससे लड़कर बच नहीं पाओगे तुम अपनी जिंदगी

मुझे एक फुटबॉल लड़ने दें

ठीक है तुम रिंग में जा सकते हो

रिंग की तरफ चल पड़ा वह अपने हाथों को हिलाता हुआ -

मैं सबसे पहले मुझे ओपड़ा की फीस के साथ ही मुझे इन मनहूस हाथों से छुटकारा दिला सकते हैं

SRI G

काश मैंने उस दिन पिताजी के नाटक कार्य में बाधा न डाली होती तो न मैं अपने हाथों की खूबसूरती खोता और न अपने पिताजी को।

तुम रिंग में आ चुके हो बच्चे।

ओह

अगर रेफरी ने उसे झकझोड़ ना दिया होता -

गुजरे हुए पलों के भवर में खो जाता उसका दिमाग

शुरू हुआ मुकाबला -

लेकिन रेखा के बचपन की दुर्दशा को याद करती वह न केवल डरी बल्कि -

सूमो फाईटर के एक ही वार ने चटा दी उस युवक को मच की धूल -

बहुत फुर्तीला है न, लेकिन मेरे इस शरीर पर तेरे वारों का क्या असर होगा भला

सूमो फाईटर बढ़ा आगे..

और उसने जो किया वार तो -

अगले पल जो हुआ वह किसी घोर आश्चर्य से कम न था -

अय, मेरा ये वार चट्टानों को तोड़ डालना उसे इसने अपने हाथों पर रोक लिया.

और -

धड़ाम !

कई फुट ऊपर उछला सूमो फाईटर -

इधर उस युवक को घेर लिया था भीड़ ने -

तुम्हारे इन बौने हाथों में इतनी ताकत

कैसे बने तुम्हारे हाथ इतने ताकतवर, बताओ ना

इन्हें क्या बताऊं, मैं खुद नहीं जानता, कैसे हुआ ये चमत्कार

बेहोशी की अंधेरी दुनिया में पहुंच चुका था वह -

किसी से कुछ नहीं बोला वह युवक.

आंखें मिचमिचाना शुरू किया उसने -

!

ओह

कमाल का आदमी है इन्होंने सपनों में से सिर्फ सौ रुपये लेकर ही चलता बना

ना जाने कहां गिरिश इस विचित्र महल का चप्पा-चप्पा गूंज उठा था ठहाकों से -

द द द द अमोघ शक्ति को पाने का सपना भंग द द द द

जिसे हम साधारण समझ रहे थे वह अभेद शक्ति अभी मौजूद है

और इस सूचना को सुनाकर मैं हैरान कर दूंगा अभेद शक्ति के निर्माता को

वह पहुंचा उस भयानक स्थान पर जिसका वातावरण पत्थर के भी रोंगटे खड़े कर देने वाला था -
और दिल दहलाऊ मुस्किले से होता हुआ
अब तुम्हे यातनाएं देने की जरूरत नहीं मुझे पता क्यों कि मुझे मिल चुका है अपने प्रश्नो का उत्तर
आज फिर आ गये तुम मुझे यातनाएं देने, लेकिन आज भी मुझे भयकर यातनाएं देते-देते थक जाओगे तुम मगर अपने प्रश्न का उत्तर नहीं पा सकोगे
दहशत और सिर्फ दहशत से भर गया यूलाक्स का चेहरा -
मैं ऐसा ही करूंगा यूलाक्स ऐसा ही करूंगा .
तुम ऐसा नहीं करोगे प्रलयराज . तुम ऐसा नहीं करोगे
और अब मैं उसे प्राप्त करने के लिए अपने सेवकों को भेजने जा रहा हूं
यहां लिखा है यही बताने आया था मैं तुम्हे
फिर प्रलयराज एक पल भी रुक नहीं सका .

इधर वह युवक बढ़ा जा रहा था अपनी मंजिल की तरफ -

अब जल्द ही मिल जाएगा मुझे अपने हाथों की इस बीमारी से छुटकारा !

अचानक चौंक पड़ा वह -

ओह, वह वाहन तो उस स्त्री को कुचल देगा !

अगले ही पल हवा में लहराया उसका शरीर और बच गई एक जिंदगी -

लेकिन अपने बचने की जरा भी खुशी नहीं थी उस स्त्री को -

ओ ! सारी दवाईयां धूल में मिल गई अब कैसे ठीक हो पायेगा मेरा बच्चा !

आपका बच्चा ठीक होगा बहन . इन सौ साधो में फिर आयेंगी धूल में मिली दवाएं .

धन्यवाद .

एक दर्द भरी मुस्कराहट होठों पर लिए उसने निहारा अपने हाथों को -

शायद इन हाथों की किस्मत में ठीक होना नहीं लिखा।

लेकिन मैं आज उस डाक्टर से जरूर मिलूंगा।

रवीज उर्फ डाक्टर उसे खाली हाथ देखकर -

आज दसवीं बार खाली हाथ। मेरा दिमाग खाने आया है ये। आज इसके हाथों का इलाज करवाकर ही छोड़ूंगा इसे।

नगर में एक प्रयोगशाला बनी हुई है जिसमें रहते हैं प्रोफेसर आलजा वही तुम्हारे हाथों को ठीक कर सकते हैं

च य उसने इलाज

खुशी से दमक उठा युवक का चेहरा -

धन्यवाद डाक्टर साहब, मैं आज ही जाकर प्रोफेसर आलजा से उनकी प्रयोगशाला में मिलूंगा।

जिसे सच समझकर वह बढ़ रहा था प्रोफेसर आलजा की प्रयोगशाला की तरफ -

SALE

बेवकूफ प्रोफेसर आलजा की प्रयोगशाला तक बड़े - बड़े घोड़ा नहीं पहुंच पाये तो तू कहां से पहुंचेगा।

बहुत बड़ा मजाक किया था डाक्टर ने उस युवक के साथ।

उधर सुपर हीरो मार्केट की सुपर हीरो दी हटरी में -

काम हो जायेगा ना ?

बिल्कुल, आप सिर्फ हमारे सुपर हीरोज की सेवाओं की कीमत अदा कीजिये बस

फिर -

अब खैर नहीं प्रोफेसर आलूजा और उसकी प्रयोगशाला की !

SUPER HERO

प्रो० आलूजा की प्रयोगशाला झोपड़ी -

जिसके सामने इस समय खड़ा था वह युवक -

इसी प्रयोगशाला के अन्दर मिलेगा मुझे प्रोफेसर आलूजा

उफ् ये किरणें खत्म कर देंगी मुझे

उसके दोनों से निकले यन्त्रों ने किरणें -

अचानक ठिठक गये उसके आगे बढ़ते कदम -

ये क्या हो रहा है ?

के लिए उठे उसके हाथ से आ किरणें तो हो गया चमत्कार –

है ये किरणें मेरे हाथों से टकराकर नष्ट हो गईं।

इस बार किरणों को अपने पास भी नहीं फटकने दिया उसने –

ये यन्त्र मुझे अन्दर नहीं पहुंचने देंगे, इन्हें किसी तरह नष्ट करना होगा।

धिक् धत्

लेकिन मैं इन्हें कैसे नष्ट कर पाऊं ओह ये तो मेरे एक ही वार से चकनाचूर हो गईं।

फिर तो पानी का बुलबुला साबित हुई उसके लिए वे मुक्कियां

धत् धत्

ना पहुंचा प्रयोगशाला के दरवाजे तक

जिसने की उसे रोकने की असफल कोशिश -

धड़ाम..

लेकिन

ये दरवाजा भला कब तक रोक पायेगा मुझे।

धड़ाम्

प्रयोगशाला के अन्दर पहुचा वह -

यहा तो कही नही दिख रहे प्रोफेसर आत्रजा।

बुधर अपनी गुप्त लैब मे बैठे प्रोफेसर आत्रजा चौंक उठे -

साधरन

इसका मतलब कोई प्रयोगशाला के अन्दर पहुचने मे सफल हो गया है

धड़ाम्

हैरानी के साथ वे दौड़ते-भागते बाहर की तरफ दौड़ पड़े प्रोफेसर आत्रजा -

प्रयोगशाला के बाहर लगा सिक्योरिटी सिस्टम को ध्वस्त करके अन्दर पहुचने वाला कोई साधारण शख्स नही हो सकता।

इधर -

प्रोफेसर आल्दजा की खोज में आगे बढ़े उसके कदम...

पर कसता चला गया वह शिकंजा -

ओह !

फड़ !

उफ ! ये शिकंजे !

शिकंजे से छूटने की कोशिश करते उस युवक को...

... अपनी तरफ बढ़ते इस खतरे का पता तब चला...

...जब -

ओह

... हो गया वह कैद -

और फिर

फड़

अह ह

हावी होती चली गई उस पर बेहोशी...

उफ्...

ठीक तभी वहां पहुंचे प्रोफेसर आहूजा -

ये युवक है जो यहां आकर फंस गया मशीन के जाल में... लेकिन ये है कौन ?

झूल गया उसका शरीर मशीन की बाहों में -

उसके हाथ देखकर ऐसे चौंके प्रोफेसर आहूजा जैसे करण्ट लगा हो उन्हें।

हे भगवान! इसके हाथों की बनावट!..ये-ये तो... ये तो..!

खड़ड़ड़...

स्क्रीन पर नजर पड़ते ही सांसे थम गई प्रोफेसर की -

तभी वहां उभरे शोर ने पूरी न होने दी प्रोफेसर की बात।

ओह! सुपर हीरो.. इरादे अच्छे नहीं लगते इनके.. प्रयोगशाला को ध्वस्त करने आये हैं ये सभी के सभी...

लेकिन अब तो इन्हें रोक पाना भी मुश्किल है, क्योंकि प्रयोगशाला के बाहर के सुरक्षा इन्तजामों को यह युवक ध्वस्त कर चुका है!

अब कैसे रोकूं मैं इन्हें ?

परेशानियों का सागर ठाठें मार रहा था प्रोफेसर अचला के चेहरे पर -

कि अचानक -

ना, यही ठीक रहेगा !... यही एकदम ठीक रहेगा !

प्रयोगशाला से बाहर -

झोपड़ा ! जिसे हम खत्म करने आये हैं !

और खत्म करके ही जायेंगे !

अब कुछ देर बाद धूल में मिली नजर आयेगी !

शाम से खड़ी झोपड़ी थी यह हमारी !

धूल में झोपड़ा नहीं तुम सबके ईरादे मिलेंगे कमीनो !

?

?

कौन हैं ये ? ... किसकी मौत उसे हमारे सामने खींच लाई है !

कौन हो तुम ?

कौन हो तुम ?

अभेद्य ! वो दीवार हूं मैं जिसे भेदकर तुम आगे नहीं बढ़ सकते !

- कौन थावो "अभेद्य" जो दीवार बनकर आ खड़ा हुआ सुपर हीरो के रास्ते में क्या सुपर हीरो उसे अपने रास्ते से हटा पाऐ ?
- कहां थी "असीम शक्ति" और कौन था प्रलयराज ?
- कौन था असीम शक्ति" का निर्माता गुंजाका ?
- क्या हुआ उस गन्दे हाथ वाले युवक का जिसके हाथों को देखकर बुरी तरह चौंक उठे थे प्रोफेसर आलजा ?
- क्या प्रोफेसर आलजा बचा सके भारखण्डा को उसके दुश्मनों से ?

इन सब सवालों को जानने के लिए पढ़ें आगामी दहकता कामिक्स

'अभेद्य'